भारत में नारी की सामाजिक, वैधानिक स्थिति का मुख्य पहलू

प्रीति कुमारी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, ति०मां०भा०वि०वि०, भागलपुर

ई–मेलः pritykumari26718@gmail.com

सारांश

किसी भी राष्ट्र की खुशहाली के लिये वहाँ की महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान होता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं को समाज, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास की मुख्यध ारा में लाने के उद्देश्य से वर्ष 1975 में महिला दशक मनाने की घोषणा का उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा और हाल ही में विगत पाँच वर्ष पहले 4 से 14 सितम्बर 1995 में चौथा विश्व महिला सम्मेलन चीन देश में आयोजित किया गया।

वर्तमान समय में भारतीय महिलाओं के स्तर को सुधारने उनको पुरूषों के साथ समान स्तर पर लाने के लिए अनेक स्वैच्छिक, महिला संगठन निर्मित किये गये हैं। 21 नवम्बर 1995 को महिलाओं के बारे में राष्ट्रीय नीति का प्रारंभिक प्रारूप जारी किया गया। इसे महिला नीति में महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 30 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की गई।

भारत का प्राचीन इतिहास अत्यंत ही महत्वपूर्ण रहा है। इस काल के भारतीय दर्शन एवं सामाजिक तथा पारिवारिक वातावरण में ऐसी मान्यताओं भावनाओं एवं प्रेरणाओं का सष्जन किया जिसके फलस्वरूप एक उच्च कोटि की सभ्यता केन्द्रित की नींव पड़ी और इस आदर्ष समाज के निर्माण में नारियों का सबसे अधिक योगदान रहा। नारियों के संदर्भ में कहा जाता है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों की देन महान होती है। माता का कर्त्तव्य केवल खान–पान या स्नेहदान तक ही सीमित नहीं है। अपितु इसके साथ ही वह अपने बच्चे को जीवन में विकसित होने तथा उत्कर्श की ओर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करती है।

मध्यकालीन भारत के अन्धकारमय युग में भी हमारा देश वीरांगनाओं के चरित्र से ओत–प्रोत रहा वस्तुतः भारत का इतिहास अनेक प्रसिद्ध महिला दार्शनिकों, शासिकाओं, विचारकों और योद्धा, विरांगनाओं से भरा पड़ा है। गुलाम वंश के सबसे प्रभावशाली, सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री रजिया बेगम अपने पिता के द्वारा छोड़े गए विशाल साम्राज्य की शासिका बनीं। उन्होंने जिस सुझ–बूझ और कुशलता का प्रयोग किया वह अविष्मरणीय है।

अर्थात् हमारी सभ्यता और संस्कृति में नारी को देवी माना गया है। वेद हो या धर्मग्रंथ नारी को बराबरी का स्थान हो दिया गया है।

त्रेता युग में भी नारी को अत्यंत महत्व दिया जाता था। रामायण में प्रत्येक नारी पात्र की स्थिति सम्मानीय थी। कोई भी धार्मिक कार्य उनके बिना अपूर्ण माना जाता था।1

सतयुग में भी नारी को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे। उस समय नारी वास्तव में अर्धांगिनी मानी जाती थी। आवश्यकता पड़ने पर देश की रक्षा में समाज के संचालन में भी वे आगे रहती थी।

आर्य का लीन संस्कृति में स्त्री को सामाजिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में समानता का दर्जा दिया गया। वे आवश्यकता पड़ने पर पति को उपयुक्त मार्गदर्शन भी देती थीं। मौर्ययुग में स्त्रियाँ स्वतंत्र एवं संतुष्ट थी। महिलाओं पर अत्याचार करनेवालों को कठोर दण्ड दिया जाता था।

संसार में घर–परिवार देश, समाज के संचालन में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। प्राचीन समय में जब पुरूश आहार सामग्री जुटाने एवं आत्मरक्षा के कामों में व्यस्त रहते थे तब समाज की व्यवस्था, गष्हस्थी का संचालन, बच्चों को अपनी सभ्यता संस्कृति एवं संस्कार देना सब काम नारियाँ ही करती थीं।

मध्यकाल में स्त्रियों की दशा सम्मानजनक थी। विदेशी आक्रमणकारियों के आने से उनको पर्दे में रखा जाना, घर की चहारदीवारी में कैद करके रखा जाना शुरु हो गया। समाज ने अपने इन कृत्यों को धर्म का नाम देकर स्त्रियों के जीवन को कष्टप्रद बना डाला। उसी समय बहुपत्नी विवाह यौनशोषण की कुप्रथा की भी शुरुआत हो गयी थी।[2]

विदेशी आक्रमणकारी जब हमारे देश को छोड़कर गये तथा हमारा देश आजादी की आबो हवा मे जीना शुरु किया उसी समय समाज मे गरीबी, अशिक्षा छुआछूत जैसी कुरीतियों का साम्राज्य स्थापित हो चुका था। समाज में स्त्रियों की स्थिति चिंताजनक थी। पुरूषों के साथ बराबरी का काम करने के बावजूद परिवार में उनकी स्थिति महत्वहीन हो चुकी थी।[3] नारी को प्रकृति ने कोमल बनाया है तथा पुरूष को कठोर। नारी का हृदय पक्ष प्रबल है वहाँ पुरूष बुद्धिप्रधान है। हृदय में दया, करूणा ममता, अपनापन और समर्पण अधिक होता है, वहाँ बुद्धि में चतुराई। नारी को प्रकृति ने श्रेष्ठ गुण दिये हैं। कहा जाता है कि पुरूष यदि नारी के गुणों को अपने भीतर उतार ले तो देवता हो जाता है। पर यदि नारी पुरूष की चतुराई अपने जीवन में उतार ले तो राक्षसी बन जाती है इसलिए नारी को चाहिए कि वह प्रकृति प्रदत्त अपने गुणों की रक्षा करे।

आज की नारी नर होना चाहती है वह नर की पूरक होना ही नहीं चाहती है। वह बराबरी चाहती है। उसे सोचना चाहिए कि दो नर कब तक साथ निभा सकते हैं, क्या उनके अहं टकरायेंगे? उसे चिन्तन करना चाहिए कि ये माँस पिण्ड न नर है। न नारी/पिण्ड में शिव की प्रधानता ही नर है और शक्ति की प्रधानता नारी। अर्थात् नर के भीतर एक नर और तथा नारी के भीतर एक नारी और है। भीतर के नारी को सदा भीतर के नर की तलाश रहती है, तथा भीतर के नर को सदा भीतर की नारी की चाहत। यह चाहत ही ललक बनकर दोनों को मिलाती है। नारी की वास्तविक पहचान उसका यौवन है। नारी का रमणी रूप ही मोहक होता है। नर अपना सर्वस्व देकर ही नारी का सर्वस्व पाता है। प्रश्न केवल पहल का है। नर–नारी शिवशक्ति के ही

रूप हैं और कुछ नहीं। रोटी, कपड़े और आश्रय की सुरक्षा के लिए नारी का विवाह उसका अपमान है। प्रेम में बराबर का भाव होना चाहिए।

आज नारियों की स्थिति दयनीय है। उन्हें प्रेम की दृष्टि से न देखकर उपयोग की दर्ष्टि से देखा जा रहा है। कई बार तो नारियाँ खुद की मर्जी से खुद का शारीरिक शोषण करवा रहीं है।

आज की नारी माँ से मादा बनती जा रही है। उसकी ममता खत्म होती जा रही है। अब वह बच्चा पैदा करने की मशीन बनकर जानी जाती है। वह स्तनपान कराना तथा मातृत्व के जो संस्कार होते हैं। उनकी भूमिका निभाने में पीछे होते जा रही है। उनकी भूमिका निभाने में पीछे होते जा रही है। यही कारण है कि वह बेटा–बेटी नहीं जानती। टिन्टू–पिन्टू जानती है, जो संवेदन व संस्कार हीन होते हैं फिर रिश्तों में टूटन व जिन्दगी बोझ लगती है।

कालचक्र के साथ सब कुछ घूमता है। नारी स्वतंत्रता की बातें होती है और ये बातें करने वाले लोग ही नारी का यौन शोषण करते हैं। चीन में नारी शाषण के बुरे हाल है। पग–पग षोशण के कारण दो लाख महिलाएँ प्रतिवर्ष आत्महत्यायें करती है। चीन में गरीबी है। जनसंख्या का बढ़ता सैलाब है और गाँव की किशोरियों को शहरी आकर्षण है। भूख और गरीबी उनको शहर की ओर पलायन करने को मजबूर करती है। वे यहाँ नौकरी के लालच में लायी जाती है। जहाँ लड़कियाँ बेचने वालों के बड़े–बड़े गिरोह हैं। जहाँ इनकी खरीद–बिक्री होती है।

चीन की तरह भारत भी जनसंख्या की दृष्टि से बड़ा देश है। यहाँ भी देह व्यापार के अड्डे कम नहीं है। गाँधी में धन्धों के अभाव में गरीबी है और शहरों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। लड़कियों की संख्या घट रही है। वहाँ पैसों का आकर्षण बढ़ रहा हैं इस देश में देह शोषण के अड्डों की भी कोई कमी नहीं है। दलालों के बाजार गर्म हैं। विदेशी मूल के लोग यहाँ आकर लड़कियों से शादी करते हैं। पैसों के आकर्षण में सब कुछ होता है। वे लोग यहाँ ऐश अय्याशी करने आते हैं और लौट जाते है। क्या यही जिन्दगी है। अकेले पंजाब में पन्द्रह हजार ऐसे मामले है जिसकी पीड़ा वहाँ की किशोरियाँ भोग रही है। नये पन और वैभव के प्रति आकर्षण का यह नतीजा है कि वे उन पर कानूनी कार्यवाही करने विदेश भी नहीं जा सकती। उनसे उनको न छोड़ते बनता है न रखते। सुहाग के नाम पर पीड़ा भोगना उनकी नियति बन गई है। भारत में विवाह एक पवित्र बन्धन है जिसे संस्कार के रूप में ग्रहण किया जाता है और सम्बन्धों को जन्मों तक निभाने की प्रतीज्ञा की जाती है। विदेशों की तरह यहाँ हर दिन तलाक नहीं होता। पर विदेशी प्रभाव यहाँ भी काम करने लगा है। क्लबों की जिन्दगी जीने वाले लोगों पर उसका प्रभाव प्रबल है। वे सहज अपनी पत्नियाँ किताबों की तरह बदल लेते हैं केवल टेस्ट बदलने के नाम पर और इन सभ्य कहें जाने वाले पतियों की कोई ऐतराज भी नहीं होता। ये हमारी संस्कृति पर विदेशी प्रभाव ही नहीं प्रहार भी है। जो आगे नहीं बढ़ना चाहिये। ये सभ्यता के नाम पर पशुता का ही प्रचार–प्रसार है। इन सभ्य लोगों का तर्क हो सकता है कि हर कोई अपना जीवन अपने तरीके से जीने के लिए स्वतंत्र है। आदमी की अपना जीवन पूरे मनोयोग से जीना चाहिये। उसे बन्धनों में क्यों बाँधा जाये। वह क्यों नहीं मुक्त होकर जीये पर ऐसी मुक्तता वासना भरी होती

है। नसों का नशा उतरते ही सब कुछ ढ़ीला पड़ जाता है अतः जो कुछ भी मर्यादा में हो तब ही शुभ है। हमारे यहाँ सारे सम्बन्ध आस्था और विश्वास पर टिके हैं। आस्था और विश्वास पर टिके संबंध होना सहज है पर तोड़ना कठिन। सभी रिश्ते मन की संवेदना से जुड़े हैं। इसलिये भारतीय संस्कृति में सम्बन्धों के निर्धारण में स्वभाव की सामंजस्यता को अधिक महत्व दिया गया है जिससे जीवन में कटुता न आ सके।[4]

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरूशों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था।[5] हालांकि कुछ अन्य विद्वानों का नजरिया इसके विपरीत है।[6] पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारंभिक वैदिक काल[7,8] में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वैदिक ऋचाएँ यह बताती हैं कि महिलाओं की शादी एक परिपक्व उम्र में होती थी और संभवतः उन्हें अपना पति चुनने की आजादी भी थी।[9] ऋग्वेद और उपनिषद् जैसे ग्रंथ कई महिला साध्वियों और संतों के बारे में बताते हैं जिनमें गार्गी और मैत्रेयी के नाम उल्लेखीय हैं।[10]

प्राचीन भारत के कुछ साम्राज्यों नगरवधु (नगर की दुल्हन में) जैसे परंपराएँ मौजूद थी। महिलाओं में नगरवधु के प्रतिष्ठित सम्मान के लिये प्रतियोगिता होती थी। आम्रपाली नगरवधु का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण रही है।

अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलता था। हालांकि बाद में (लगभग 500 ईसा पूर्व में) स्मृतियों (विशेषकर मनुस्मृति) के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरु हो गयी और बाबर एवं मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद इंसानयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया।

हालांकि जैन धर्म जैसे सुधारवादी आंदोलनों में महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होने की अनुमति दी गयी है। भारत में महिलाओं को कमोवेश दासता और बंदिशों का सामना करना पड़ता है। करना पड़ा है। माना जाता है कि बाल विवाह की प्रथा छठी शताब्दी के आसपास शुरु हुई थी।

निष्कर्ष

भारत की राजनीतिक व्यवस्था का आधार उसकी राजनीतिक संस्कृति है। राजनीतिक संस्कृति से राजनीतिक व्यवस्था का चरित्र निर्धारण होता ही वस्तुतः किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास की चर्चा की जायेगी तो उसमें पुरूष वर्ग के साथ ही महिला वर्ग के योगदान को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भा महिलाएँ होती है। बिना महिला के सुखमय समाज की कल्पना तक नहीं की जा सकती है।

यद्यपि स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में अनेक बाधायें आज भी है, अनेक अत्याचारों से नारी जूझ रही है, तथापि समस्त सामाजिक संदर्भों से जुझ रही स्त्रियों की सक्रियता को अब न केवल पुरूष वरन् परिवार, समाज एवं राष्ट्र ने भी स्वीकार किया है, जो कि महिलाओं के सुखद भविष्य की ओर इशारा करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. महिलाओं के कानूनी, *धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार,* रमा शर्मा, एम०के० मिश्रा, पृ० **55**
2. वहीं, पृ० **56**
3. वहीं, पृ० **57**
4. *भारतीय समाज में कार्यशील महिलाएँ,* रमा शर्मा, एम० के० मिश्रा, पृ० **16–18**
5. अ आ मिश्रा, आर सी (2006) *टूवार्डस जेन्डर इक्वेलिटी,* आधोरसपरेश
6. प्रोथी, रामेश्वरी देवी एंड रोमिला (2001) स्टेटस एंड पोजीशंस ऑफ वुमेन
7. कात्यायन द्वारा वर्त्तिका, 125, 2477
8. पतंजलि द्वारा अष्टध्यायी के लि० टिप्पणियाँ 3.3.21 और 4.1.14
9. आर०सी० मजुमदार और ए०डी० पुसल्कर (संपादक) : *भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति* बाल्युम / वैदिक युग, मुम्बई भारतीय विद्या भवन 1951, पी० 394
10. *"वैदिक वुमेन : लविंग, लरन्र्ड लकी*। आगमन तिथि 2006–12–24